जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर

राष्ट्रदूत

Rashtradoot

वर्ष: 49 संख्या: 311 प्रभात जयपुर, सोमवार, 14 जून 1999

"आयुर्वेदिक दवा "कर्कटोल" कैंसर उपचार में कारगर

जयपुर, 13 जून।(वार्ता)। आयुर्वेदिक दवाओं से कैंसर का निदान खोजने में लगे डॉ.नंदलाल तिवारी का दावा है कि नयी दिल्ली के आयुर्विज्ञान संस्थान के भैषज विज्ञान विभाग ने भी "कर्कटोल" दवा का चूहों पर परीक्षण कर उसे सुरक्षित पाया है।

डॉ.तिवारी ने कई वर्षों के प्रयास से "कर्कटोल" नामक आयुर्वेदिक दवा तैयार की है जो उनके अनुसार गर्भाशय तथा भोजन नली के कैंसर और रक्त कैंसर के इलाज में कारगर सिद्ध हो रही है। डॉ.तिवारी ने यूनीवार्ता से बातचीत में कहा कि लंदन की प्रतिष्ठित लाइम एंड मार्टिन प्रयोगशाला ने भी यह निष्कर्ष निकाला है कि यह दवा पूरी तरह सुरक्षित है।

उन्होंने कहा कि कर्कटोल पर आगे और गहन अनुसंधान की जरूरत है।

डॉ.तिवारी ने कहा कि वह कर्कटोल दवा की आधुनिक तरीके से प्रामाणिकता की जांच कराने के लिए केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय को कई बार लिख चुके हैं। भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद ने भी इस दवा के क्लीनीकल परीक्षण संबंधी परियोजना पर चुप्पी साध रखी हैं और निजी स्तर पर विदेशों से यह परीक्षण कराने पर लाखों रूपये खर्च होते हैं।

उन्होंने बताया कि कैंसर के इलाज के लिए वर्तमान चिकित्सा पद्धति में जो दवायें उपलब्ध हैं वे अपने जहरीले प्रभाव से ही कैंसर कोशिकाओं को नष्ट करती हैं जबकि कर्कटोल के साथ ऐसा नहीं हैं। दूसरे यह दवा बहुत सस्ती है।

उन्होंने बताया कि "कर्कटोल" दवा की विदेशों से मांग आने पर पिछले कुछ वर्षों से इसे कैप्सूल का रूप दिया गया हैं। उन्होंने कहा कि कई विदेशी विशेषज्ञ डाक्टर भी कैंसर मरीजों को चिकित्सा के लिए उनके पास भेज रहे हैं। उन्होंने दावा किया कि आखिरी स्टेज के करीब 40 से 50 प्रतिशत मरीजों को उनकी दवा से लाभ हुआ हैं।

नागौर जिले के नीमडी कलां के निवासी डॉ.तिवारी ने साठ के दशक में असम तथा दार्जीलिंग में चाय बागानों का प्रबंध देखते समय कैंसर रोग की आयुर्वेदिक दवाओं की खोजबीन की। बाद में उन्होंने वैध विशारद की परीक्षा उत्तीर्ण करके वह कैंसर चिकित्सा के अनुसंधान में लग गये। इन दिनों वह कैंसर का पता लगाने वाली दवा बनाने का प्रयास कर रहे हैं।

डॉ.तिवारी ने कहा कि बाद में विस्तृत परीक्षण में यह दवा द्रव पदार्थ के रूप में होगी जिसे जीभ पर लगाते ही यह पता चल जाएगा कि रोगी को कैंसर हैं अथवा नहीं। इसके बाद विस्तृत परीक्षण कराना उपयोगी होगा।